Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

# हिमाचल प्रदेश की मंगलामुखी जाति का योगदान तथा वर्तमान स्थिति

**Dr. Mritunjay Sharma[1] and Manoj Kumar[2]**

[1]Assistant Professor, Department of Performing Arts(Music), Himachal Pradesh University, Shimla
[2]Ph.D. Research Scholar, Department of Performing Arts(Music), Himachal Pradesh University, Shimla

संक्षेपिका

मंगलामुखी जाति हिमाचल प्रदेश की प्राचीन जाति है। इस जाति का देवी–देवताओं तथा संगीत के साथ गहरा सम्बन्ध है। मंगल+मुख इन दो शब्दों के मिलने से मंगलामुखी शब्द बना है। प्रत्येक मांगलिक कार्यों में जिनका योगदान रहता है उन्हें मंगलामुखी कहा जाता है। मंगलामुखी जाति की वर्तमान स्थिति हिमाचल के कुछ जिलों में काफी दयनीय है। पाश्चात्य संगीत का सबसे अधिक प्रभाव इस जाति पर पड़ा है। हमारी सभ्यता और संस्कृति पतन की तरफ अग्रसर है। युवा पीढ़ी अपने पूर्वजों के कार्यों को भुलती जा रही है। हमारे लोक संगीत और लोक सभ्यता को संरक्षित करने में मंगलामुखी जाति का विशेष योगदान है। मंगलामुखी जाति के योगदान को देखते हुए इस जाति पर शोध कार्य अनिवार्य है।

बीज शब्दः मंगलामुखी जाति, हिमाचल,

## भूमिका

संगीत एक ऐसी कला है जो सभी ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ मानी गई है क्योंकि इसकी उत्पत्ति का माध्यम नाद है जो कि अति सूक्ष्म है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक संगीत की उत्पत्ति और विकास पर दृष्टिपात करने से पता चलता है कि संगीत का भविष्य अत्यन्त उज्जवल था और है। संगीत के विकास में अनेक प्रकार की बाधाएं सामने आई है परन्तु फिर भी संगीत विकसित हुआ और वर्तमान में और अधिक विकसित हो रहा है।

वैदिक काल से लेकर संगीत का मनुष्य के जीवन के साथ अटूट सम्बन्ध रहा है। कोई भी मनुष्य संगीत से घृणा करें, अगर इससे दूर रहने की सोचे तो यह असम्भव है, क्योंकि ध्वनि और नाद का सीधा सम्बन्ध हमारे हृदय और मन से है। संगीत एक अत्यन्त प्रभावशाली और भावनात्मक कला है, जिसका मानव जीवन पर अत्यन्त प्रभाव पड़ता है। वर्तमान काल में संगीत एक महत्त्वपूर्ण विषय बन गया है प्रत्येक व्यक्ति की संगीत में विशेष रूचि है और वह संगीत को सीखने और जानने का भी भरसक प्रयत्न करता है। एक समय था जब संगीत और संगीतकार को निकृष्ट दृष्टि से देखा जाता था, किन्तु आज के समय में संगीत कला ने बृहद रूप धारण कर लिया है। कोई भी मनुष्य संगीत के नियमों से भले ही परिचित न हो लेकिन अपने लोक संगीत से अनभिज्ञ नहीं रहता क्योंकि यह जनसाधारण व उनके संस्कारों में व्याप्त है। यही कारण है कि यह इतना प्रभावशाली और महत्वपूर्ण है।

## शोध कार्य के उद्देश्य

हिमाचल प्रदेश में मंगलामुखी जाति की वर्तमान स्थिति का अध्ययन।

## शोध क्षेत्र

प्रस्तुत शोध का कार्य क्षेत्र हिमाचल प्रदेश की मंगलामुखी जाति से सम्बन्धित था।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

## शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य को क्रियान्वित करने के लिए सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया।

## मंगलामुखी जाति का परिचय

हिमाचल प्रदेश में मंगलामुखी जाति का संगीत से गहरा सम्बन्ध है। मंगल+मुख इन दो शब्दों के मिलने से मंगलामुखी शब्द बना है, जिसका अर्थ है मंगल की तरफ मुखवाला। हिमाचल प्रदेश में होने वाले प्रत्येक मांगलिक कार्यों में मंगलामुखी जाति का सबसे बड़ा योगदान रहता है। हिमाचल प्रदेश में मंगलामुखी जाति को अलग–अलग नामों से जाना जाता है। हिमाचल प्रदेश के ऊपरी जिलों में इस जाति के लोगों को तूरी, ढाकी, मंगलामुखी आदि नामों से पुकारा जाता है, वहीं निचले इलाकों में हेसी, बजन्तरी, सहनाई, मरासी, माहाशै आदि नामों से जाना जाता है। हिमाचल प्रदेश में शोध कार्य से मिली जानकारी के अनुसार यह सभी नाम मंगलामुखी जाति से ही सम्बन्धित है। इस जाति का प्रमुख कार्य संगीत ही रहा है। समाज में होने वाले प्रत्येक मांगलिक कार्य चाहे वह देवी–देवताओं से सम्बन्धित कार्य हो या शादी–विवाह से सम्बन्धित हो सभी में मंगलामुखी जाति का विशेष योगदान रहता है। मंगलामुखी जाति की उत्पत्ति के बारे में 'विष्णुपुराण' में उल्लेख मिलता है कि ''इनकी उत्पत्ति ब्रह्म जी से हुई है। सर्वप्रथम ब्रह्मा जी की जंघा से असुरों की उत्पत्ति हुई, क्योंकि उस समय तमोगुण की अधिकता थी, तत्पश्चात् उन्होंने तमोमात्रात्मक शरीर को त्याग दिया, उस त्यागे हुए शरीर से रात्रि काल का आविर्भाव हुआ, तब उन्होंने पुनः शरीर धारण कर सृष्टि की कामना की और उनके मुख से तत्व प्रधान देवगण उत्पन्न हुए।'' पित्रों की रचना हुई, प्राणियों की सृष्टि हुई, उसी समय उनके शरीर से गन्धर्वों की उत्पत्ति हुई। ''वे गो (वाणी) तथा धयन (उच्चारण) करते हुए उत्पन्न हुए इसलिए गन्धर्व कहलाए।'' और यह भी कहा जाता है कि ''जब ब्रह्मा जी ने स्वायंभुव को प्रजा उत्पन्न करने का आदेश दिया तो उस समय सर्वप्रथम दक्ष जी ने ऋषि, गन्धर्व, असुर और सर्पादि को मानसी प्रवृत्ति से उत्पन्न किया।

हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक जिले में इस जाति के लोग प्राचीन समय से निवास करते आ रहे है। देवी–देवताओं के साथ ही मंगलामुखी जाति की उत्पत्ति भी मानी गई है। देवी–देवताओं के प्रत्येक कार्य में यह जाति प्राचीन समय से बहुत अधिक योगदान देती आ रही है। देवी–देवताओं के मन्दिर के समीप मंगलामुखी जाति के लोगों का निवास अवश्य होता है।

## मंगलामुखी जाति का संगीत क्षेत्र में योगदान

मंगलामुखी जाति व गन्धर्वों का पहले से ही संगीत के साथ सम्बन्ध रहा है। गन्धर्व और मंगलामुखियों का जिस भी ग्रन्थ में वर्णन मिलता है वहां उन्हें संगीतज्ञ के रूप में ही वर्णित किया गया है। हर युग में इनका प्रमुख कार्य संगीत ही रहा है। कहा जाता है कि गन्धर्वों में हाहा और हूहू नामक गन्धर्व हुए जो ब्रह्मा जी के निकट दिव्य गान किया करते थे। विष्णु पुराण में गन्धर्व, सर्प, राक्षस, अप्सरा आदि की स्थिति एवं कार्यों का वर्णन किया है। इसमें अप्सराएं नृत्य का कार्य करती थी और गन्धर्व यशोगान किया करते थे। गन्धर्व इन्द्र की सभा में गायक भी थे और देवी–देवताओं को प्रसन्न करने के लिए गन्धर्व यशोगान किया करते थे। मंगलाचरण करते थे और अप्सराएं नृत्य करती थी। श्रीमद्भागवत महापुराण में मंगलामुखी और गन्धर्वों का वर्णन इस प्रकार मिलता है

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

दिव्यवाद्यान्त तूर्याणि पेनुः कुसुमवृष्टयः।

मनुस्तुरुटुवुस्तुष्टा जुगन्धर्व किन्नरा।।

अर्थात् आकाश में मांगलिक बाजे बजने लगे देवी–देवता फूलों की वर्षा करने लगे, मुनि प्रसन्न होकर स्तुति करने लगे गन्धर्व किन्नर गाने–बजाने लगे और अप्सराएं नृत्य करने लगी। मंगलामुखी जाति के लोग हिमाचल में होने वाले प्रत्येक कार्य चाहे वह दैविक कार्य हो या सांस्कारिक कार्य हो सभी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। मंगलामुखी जाति के कलाकारों की आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय होने के पश्चात् भी इस जाति के लोग हिमाचल प्रदेश की पौराणिक सभ्यता एवं संस्कृति को जिंदा रखने के लिए भरसक प्रयत्न करते आ रहे है।

- देवकार्यों में मंगलामुखी जाति का योगदान
- संस्कारों में योगदान
- मेलों तथा उत्सवों में योगदान

## देवकार्यों में योगदान

हिमाचल प्रदेश को देवभूमि कहकर पुकारा जाता है क्योंकि यहां के हर क्षेत्र में देवी–देवता निवास करते है। रामायण और महाभारत काल से लेकर आज तक देवी–देवताओं से सम्बन्धित जितने भी कार्य रहें हो उन सभी कार्यों में मंगलामुखी जाति का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। हिमाचल के प्रत्येक मन्दिरों में सुबह–शाम पूजा–पाठ आदि कार्य होते है, जिसमें मंगलामुखी जाति के कलाकार महत्वपूर्ण योगदान देते है। हिमाचल प्रदेश में कुछ जिलों में देवी–देवताओं के मन्दिरों में चार प्रहर पूजा–पाठ के कार्य होते है, इन सभी कार्यों में मंगलामुखी जाति के कलाकार अपने वाद्यों के साथ देवतालों का वादन करते है। देवी–देवताओं के प्रत्येक कारज में अलग–अलग तालों का वादन किया जाता है, पूजा के समय बजने वाले ताल, देव यात्राओं में बजने वाल ताल, देवी–देवता को प्रकट करने वाले ताल, इन सभी तालों को मंगलामुखी जाति के कलाकारों द्वारा ही बजाया जाता है। जब तक इन तालों का वादन नहीं होता तब तक देवी–देवताओं से सम्बन्धित कोई भी कार्य पूर्ण नहीं होता।

देव तालों के साथ–साथ मंगलामुखी जाति के कलाकार देवी–देवताओं से सम्बन्धित गायन एवं नृत्य में भी योगदान देते है। कुछ नृत्य ऐसे होते है जो देवी–देवताओं के समक्ष ही किए जाते, इन सभी नृत्यों में अधिकतर मंगलामुखी जाति के कलाकार शामिल होते हैं।

देवी–देवताओं के प्रांगण में मंगलामुखी जाति के कलाकारों द्वारा देव तालों का वादन

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

## संस्कारों में योगदान

हिमाचल प्रदेश में होने वाले सभी सोलह संस्कारों में मंगलामुखी जाति के लोगों का योगदान रहता है। जन्म से लेकर मृत्यु तक के संस्कारों में इस जाति के कलाकार अपना योगदान निभाते है। संस्कारों में विभिन्न प्रकार के गायन–वादन एवं नृत्य किए जाते है, इन सभी में मंगलामुखी जाति के कलाकार अपना विशेष योगदान देते है। जन्म संस्कार के समय सबसे पहले मंगलामुखी जाति के कलाकारों को आमंत्रित किया जाता है तथा उनसे मंगलाचार करवाया जाता है तथा पवित्र तालों का वादन करवाया जाता है। शादी–विवाह के आरम्भ में भी मंगलामुखी जाति के कलाकार अपने वाद्य यन्त्रों के साथ पहुंचकर "बधाई" ताल का वादन करते है, फिर शादी–विवाह का शुभारम्भ माना जाता है। तालों के साथ–साथ संस्कारों में अनेकों प्रकार के गायन किए जाते है, ये सभी गायन अधिकतर मंगलामुखी जाति के कलाकारों द्वारा गाए जाते है।

संस्कारिक तालों का वादन करते हुए

मंगलामुखी जाति के लोगों का हिमाचल प्रदेश की संस्कृति और सभ्यता में महत्वपूर्ण योगदान रहता है। मंगलामुखी जाति के कलाकारों में गायक, वादक और नृतक ये तीनों वर्ग आते हैं। हिमाचल प्रदेश में अनेक प्रकार के मेलें, त्यौहार, सामाजिक संस्कार, शादी–विवाह आदि कार्य होते है, ये सभी कार्य मंगलामुखी जाति के बिना सम्पन्न नहीं माने जाते है।

मंगलामुखी जाति के गायकों व वादकों का मानव मात्र के कल्याण एवं सुख–समृद्धि की मंगल कामना का घर द्वार तक प्रसारित करने में अपूर्व योगदान रहा है। इस जाति के कलाकारों द्वारा समाज में प्रचलित प्रत्येक वर्ष महीना गायन, बारहमासा गायन, चैत्र गायन भी किया जाता है और समाज में इसी जाति के कलाकारों को इन सभी विधाओं का गाने–बजाने का पूर्ण अधिकार प्राप्त है अथवा इसी जाति के कलाकारों द्वारा इसे शुभ व मंगलकारी माना जाता है।

## मंगलामुखी जाति की वर्तमान स्थिति

हिमाचल प्रदेश में शोध कार्य से मिली जानकारी के अनुसार मंगलामुखी जाति की आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति, धार्मिक स्थिति का अध्ययन किया गया। शोध कार्य से प्राप्त जानकारी के अनुसार मुंगलामुखी जाति की वर्तमान स्थिति काफी निराशाजनक है।

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

## सामाजिक स्थिति

प्राचीन समय में मंगलामुखी जाति की स्थिति बहुत अच्छी थी, समाज में इस जाति का बहुत ऊँचा स्थान था। समाज में होने वाले प्रत्येक मांगलिक कार्यों में केवल मात्र इसी जाति का योगदान रहता था। मांगलिक कार्यों में सर्वप्रथम मंगलामुखी जाति के कलाकारों को आमंत्रित किया जाता था। सर्वप्रथम मंगलामुखी जाति के वाद्य यन्त्रों की पूजा की जाती थी तत्पश्चात मंगलामुखी की पूजा होती थी, उसके बाद ही कोई भी मांगलिक कार्य आरम्भ किया जाता था। हिमाचल प्रदेश में आज भी कुछ जिलों में ऐसा किया जाता वहां आज भी मंगलामुखी जाति को बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त है। हिमाचल प्रदेश के कुछ जिलों में आज भी पूरानी सभ्यता का वास्तविक रूप देखने को मिलता है, आज भी लोगों ने पूरातन संस्कृति को धुमिल नहीं होने दिया है। इन जिलों में आज भी सारे कार्य पूरातन संस्कृति के अनुसार ही किए जाते हैं परन्तु बहुत से जिलों में समय के साथ–साथ काफी बदलाव देखने को मिला है। वहां के समाज में मंगलामुखी जाति की जो स्थिति पहले थी व आज देखेन को नहीं मिलती कुछ जिलों में इस जाति के लोगों को हीन दृष्टि से देखा जाता है। समाज में इनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों तथा योगदानों को सराहना नहीं मिल रही जिस कारण युवा पीढ़ी इस कार्य को छोड़ती जा रही है।

## धार्मिक स्थिति

हिमाचल प्रदेश को देव भूमि कहा जाता है। हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक जिलों में देवी–देवताओं का निवास है यहां पर प्रत्येक कार्य देवी देवताओं के अनुसार ही किए जाते हैं मंगलामुखी जाति का देवी–देवताओं के साथ गहरा सम्बन्ध है। माना जाता है की देवी–देवताओं के साथ ही मंगलामुखी जाति की उत्पति हुई। देवी–देवताओं के प्रत्येक कारज में इस जाति की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। हिमाचल प्रदेश में आज भी बहुत सारे मन्दिर ऐसे हैं जहां चार प्रहर पूजा पाठ के कार्य चलते हैं, इन कार्यों में मंगलामुखी जाति के कलाकार देववाद्यों पर विभिन्न अवसरों पर बजाई जाने वाली देवतालों का वादन करते हैं। देवकार्यों में इस जाति के द्वारा बहुत सारी पवित्र तालों का वादन किया जाता है। समय के साथ–साथ देवकार्यों में भी परिवर्तन देखने को मिला है। हिमाचल के बहुत से मन्दिरों में वाद्य यन्त्रों का वादन होने लगा है, जिससे इस जाति के कलाकारों पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है। हमारी देव संस्कृति पर भी इसका काफी प्रभाव पड़ा है। वास्तव में जो देवी–देवताओं के समक्ष देवतालों का वादन होता था वह सारी ताले लूप्त होती जा रही है। देव कार्यों में electronic वाद्य यन्त्रों का शोर मात्र ही रह गया है। मंगलामुखी जाति के लोग इस कारण घर पर बैठ गए हैं। युवा पीढ़ी भी इस कार्य की तरफ कोई विशेष रूची नहीं रख रही है। यही कारण है की हमारी देव संस्कृति के साथ–साथ मंगलामुखी जाती के लोगों पर इन सबका काफी प्रभाव पड़ा है।

## आर्थिक स्थिति

मंगलामुखी जाति के कलाकारों की आर्थिक स्थिति में कोई विशेष सुधार नहीं है। प्राचीन समय में मंगलामुखी जाति का अधिकतर कार्य गाने बजाने से ही चलता था। समाज में होने वाले प्रत्येक मांगलिक कार्यों में इनको आमंत्रित किया जाता था परन्तु समय जैसे–जैसे परिवर्तित होता गया इस जाति का कार्य भी कम होता गया। पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से इस जाति की आर्थिक स्थिति को काफी नुकसान हुआ है। मन्दिरों में electronic वाद्यों के आने से भी इस जाति के लोगों से इनका कार्य छिन गया जिस कारण इनकी आर्थिक स्थिति बिगड़ती चली गई। कृषि कार्यों के लिए भी इस जाति के पास पर्याप्त जमीनें नहीं है क्योंकि इस जाति

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed Journal
ISSN 2454-3144 | Volume 08, Issue 02, August 2021(Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org
© The Author(s) 2021

को प्राचीन काल से ही संगीत कार्य के लिए चुना गया था। संगीत से ही इनका घर परिवार चलता था। वर्तमान समय में कुछ जिलों में इस जाति की आर्थिक स्थिति काफी दयनीय है। आर्थिक स्थिति की बजह से भी युवा पीढ़ी इस कार्य को छोड़ रही है। मंगलामुखी जाति द्वारा गाए बजाई जाने वाली बहुत सारी विधाएं समाप्त होने की कगार पर है। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव हिमाचल की पारम्परिक लोक संस्कृति पर पड़ेगा। यहां की लोक संस्कृति क्षीण हो जाएगी। मंगलामुखी जाति की स्थिति को बचाने व सुधारने हेतु हिमाचल प्रदेश की सरकार व साथ ही यहां के सामाजिक संगठनों को उचित निति का निर्माण करने की आवश्यकता है।

## उपसंहार

हिमाचल प्रदेश की मंगलामुखी जाति का योगदान तथा वर्तमान स्थिति पर अध्ययन से मिली जानकारी के अनुसार यह जाति हमारी लोक संस्कृति एवं लोक सभ्यता में अपना भरपूर योगदान दे रही है। वर्तमान समय में भी इस जाति के वयोवृद्ध कलाकारों के पास गायन वादन की बहुत सारी विधाएं सुरक्षित है। हमारे लोक संगीत का वास्तविक स्वरूप कैसा था, लोक तालों को बजाने का सही ढंग क्या था ये सभी मंगलामुखी जाति के कलाकार भली भांति जानते हैं। खराब आर्थिक स्थिति के बावजूद भी इस जाति के लोगों ने अपने कार्य को नहीं छोड़ा, आज भी प्रत्येक मांगलिक कार्यों में चाहे वह देवकार्य हो या शादी विवाह के कार्य हो सभी में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। मंगलामुखी जाति के कलाकारों को वास्तविक रू॰ से हमारी लोक संस्कृति के संरक्षक तथा प्रचारक, प्रसारक कहा जा सकता है।

## सन्दर्भ ग्रन्थ

श्री विष्णु पुराण (1987) अनुवादक की मार्कण्डेय जी 'यदुवंशी' महामाया पब्लिकेशन, टांडा, जालन्धर
शिव महापुराण (1996) महामाया पब्लिकेशन, जालन्धर
प्रेमसागर (1866) कवि कुलभूषण पंडित ललल्लूजीकृत गंगाविष्णु श्री कृष्णदास लक्ष्मीवेंकटेश्वर, छापाखाना, कल्याण (जिला ठाना)
श्रीमद्भागवत महापुराण (सम्वत 2072) पुनर्मुद्रण (द्वितीय खण्ड) गीता प्रेस, गोरखपुर

## साक्षात्कार

अशोक भारद्वाज सुपुत्र श्री सीताराम, गांव जणोग, जिला शिमला।
अत्तर सिंह, सुपुत्र श्री पदम सिंह, गांव चिवना, जिला शिमला।
विद्यानन्द सरैक, सुपुत्र श्री गणेशा राम, गांव देवठी मझगांव, जिला सिरमौर।
बिरी सिंह, सुपुत्र श्री टीलू राम, गांव बडसू, जिला मण्डी।
दयाराम, सुपुत्र श्री मंगत राम, गांव देहरा, जिला चम्बा।